University of Technology

परिसर प्रतिध्वनि

(नवोन्मेष, युवा ऊर्जा एवं अन्तःक्रिया का अभिव्यक्ति मंच)

मासिक भित्ति पत्रिका, अंक - 19, जुलाई 2026

प्रधान संरक्षक	-	श्रीमती मीनाक्षी सुराना
प्रमुख संरक्षक	-	डॉ. प्रेम सुराना
मुख्य संरक्षक	-	डॉ. अंशु सुराना
प्रेसिडेंट (वाइस चांसलर)	-	प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन
प्रधान संपादक	-	प्रो. (डॉ.) अंकित गांधी
संपादक	-	डॉ. प्रेम कुमार
सह-संपादक	-	डॉ. मोनिका शर्मा
खेल संपादक	-	श्री यश यादव

प्रेसिडेंट(वाइस चांसलर) का संदेश ...

प्रिय विश्वविद्यालय परिवार, विश्वविद्यालय की मासिक भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' के अंक 19 को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। प्रत्येक अंक हमारे विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, शोध, सांस्कृतिक एवं नवाचार संबंधी गतिविधियों का सजीव प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है तथा विद्यार्थियों, शिक्षकों और कर्मचारियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को एक सशक्त मंच प्रदान करता है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि शैक्षणिक सत्र 2026–27 का शुभारंभ उत्साह, ऊर्जा और नई संभावनाओं के साथ हो चुका है। यह नया सत्र केवल एक शैक्षणिक यात्रा की शुरुआत नहीं, बल्कि नए सपनों, नए लक्ष्यों और नई उपलब्धियों की ओर बढ़ने का अवसर भी है। हमें विश्वास है कि हमारे नवप्रवेशी विद्यार्थी विश्वविद्यालय की समृद्ध परंपराओं, अनुशासित शैक्षणिक वातावरण और उत्कृष्ट शिक्षण व्यवस्था का लाभ उठाते हुए अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करेंगे, वहीं हमारे वरिष्ठ विद्यार्थी अपने अनुभव, नेतृत्व और प्रतिभा से विश्वविद्यालय की गौरवशाली परंपरा को और अधिक समृद्ध बनाएँगे। वर्तमान समय में उच्च शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में नवाचार, शोध, नैतिक मूल्यों, नेतृत्व क्षमता, सामाजिक उत्तरदायित्व और वैश्विक दृष्टिकोण का विकास करना भी है। 'परिसर प्रतिध्वनि' हमारे विश्वविद्यालय की अकादमिक संस्कृति और रचनात्मक चेतना का सशक्त माध्यम है। यह पत्रिका न केवल हमारी उपलब्धियों का दस्तावेज़ है, बल्कि विचारों के आदान-प्रदान, सृजनशीलता के विकास और विश्वविद्यालय परिवार के बीच संवाद को सुदृढ़ करने का भी प्रभावी मंच है। मैं इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल, विभागाध्यक्षों, संकाय सदस्यों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों एवं सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ, साथ ही नवप्रवेशी विद्यार्थियों का विश्वविद्यालय परिवार में हार्दिक स्वागत करती हूँ तथा अपने विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर नई पहचान दिलाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहें। आप सभी के उज्ज्वल भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं सतत सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन
प्रेसिडेंट (वाइस चांसलर)
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

कुलसचिव का संदेश

विश्वविद्यालय की मासिक भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' के अंक 19 (जुलाई 2026) के प्रकाशन पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि शैक्षणिक सत्र 2026–27 का शुभारंभ नई ऊर्जा, नए उत्साह और नई संभावनाओं के साथ हो चुका है। प्रत्येक नया सत्र हमें नए लक्ष्य निर्धारित करने, ज्ञानार्जन की दिशा में आगे बढ़ने तथा उत्कृष्टता के नए आयाम स्थापित करने का अवसर प्रदान करता है। मुझे विश्वास है कि हमारे नवप्रवेशी विद्यार्थी विश्वविद्यालय की समृद्ध शैक्षणिक परंपराओं का लाभ उठाते हुए अपने उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करेंगे, वहीं वरिष्ठ विद्यार्थी अपने अनुभव और प्रतिभा से विश्वविद्यालय की गरिमा को और अधिक ऊँचाइयों तक ले जाएँगे। 'परिसर प्रतिध्वनि' विश्वविद्यालय की गतिविधियों, उपलब्धियों और रचनात्मक अभिव्यक्तियों का सशक्त मंच है। यह पत्रिका विद्यार्थियों, शिक्षकों और विभिन्न विभागों के मध्य संवाद एवं सहभागिता को प्रोत्साहित करते हुए हमारी अकादमिक संस्कृति को और अधिक समृद्ध बनाती है। मैं इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल, विभागाध्यक्षों, संकाय सदस्यों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद देता हूँ। साथ ही नए शैक्षणिक सत्र के लिए सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ देता हूँ और आशा करता हूँ कि हम सभी मिलकर विश्वविद्यालय को उत्कृष्टता, अनुशासन और नवाचार की नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे। आप सभी के उज्ज्वल भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं सतत सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।
सादर...

डॉ. अनूप शर्मा
कुलसचिव
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

संपादकीय...

नया सत्र : नए संकल्प, नई संभावनाएँ

प्रिय पाठकों,

प्रत्येक अंक विश्वविद्यालय के शैक्षणिक, सांस्कृतिक, शोध एवं नवाचार से जुड़े विविध आयामों को आपके समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। इस बार का अंक विशेष महत्व रखता है, क्योंकि यह शैक्षणिक सत्र 2026–27 के शुभारंभ का साक्षी है। नया सत्र केवल कैलेंडर का परिवर्तन नहीं, बल्कि नए विचारों, नए उत्साह, नए संकल्पों और नई उपलब्धियों की ओर बढ़ने का एक सुनहरा अवसर है। विश्वविद्यालय जीवन केवल पाठ्यक्रमों तक सीमित नहीं होता। यह व्यक्तित्व निर्माण, नेतृत्व क्षमता, नैतिक मूल्यों, रचनात्मकता और सामाजिक उत्तरदायित्व को विकसित करने की एक सतत प्रक्रिया है। एक विश्वविद्यालय की वास्तविक पहचान उसके विद्यार्थियों की जिज्ञासा, शिक्षकों की विद्वत्ता, शोध की गुणवत्ता और पूरे विश्वविद्यालय परिवार की सामूहिक कार्यसंस्कृति से निर्मित होती है। हमें प्रसन्नता है कि हमारा विश्वविद्यालय इन सभी क्षेत्रों में निरंतर प्रगति कर रहा है और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ नवाचार एवं अनुसंधान को भी समान महत्व दे रहा है। नए शैक्षणिक सत्र में बड़ी संख्या में नवप्रवेशी विद्यार्थी विश्वविद्यालय परिवार का हिस्सा बने हैं। हम उनका हार्दिक स्वागत करते हैं। यह परिसर उनके लिए केवल शिक्षा प्राप्त करने का स्थान नहीं, बल्कि सपनों को साकार करने, आत्मविश्वास विकसित करने और जीवन के नए आयामों को पहचानने का माध्यम भी है। वहीं वरिष्ठ विद्यार्थियों से अपेक्षा है कि वे अपने अनुभव, अनुशासन और सकारात्मक दृष्टिकोण से नए साथियों का मार्गदर्शन करेंगे तथा विश्वविद्यालय की उत्कृष्ट परंपराओं को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। आज का युग ज्ञान और तकनीक का युग है। बदलती वैश्विक परिस्थितियों में केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि कौशल विकास, अनुसंधान, नवाचार, डिजिटल दक्षता, उद्यमिता और मानवीय संवेदनाओं का समन्वय भी आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भावना के अनुरूप हमारा विश्वविद्यालय विद्यार्थियों को बहुआयामी शिक्षा प्रदान करने और उन्हें भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने हेतु निरंतर प्रयासरत है। हमें विश्वास है कि यह नया सत्र नई उपलब्धियों, सार्थक शोध, रचनात्मक गतिविधियों और सामाजिक सरोकारों से परिपूर्ण रहेगा। 'परिसर प्रतिध्वनि' केवल एक भित्ति पत्रिका नहीं, बल्कि विश्वविद्यालय की सामूहिक चेतना और सृजनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त मंच है। यह विद्यार्थियों, शिक्षकों और विभिन्न विभागों के बीच संवाद स्थापित करते हुए प्रतिभाओं को पहचान देने का कार्य करती है। हमें प्रसन्नता है कि विश्वविद्यालय परिवार का निरंतर सहयोग इस पत्रिका को अधिक समृद्ध, सारगर्भित और प्रभावी बना रहा है।

इस अंक के माध्यम से हम सभी विद्यार्थियों से आग्रह करते हैं कि वे केवल अध्ययन तक स्वयं को सीमित न रखें, बल्कि साहित्य, शोध, नवाचार, खेल, सांस्कृतिक गतिविधियों, सामाजिक सेवा और रचनात्मक लेखन में भी सक्रिय सहभागिता निभाएँ। आपकी प्रतिभा और सकारात्मक सोच ही विश्वविद्यालय की सबसे बड़ी शक्ति है। अंत में, हम विश्वविद्यालय के कुलाध्यक्ष, उप-कुलाध्यक्ष, माननीय कुलपति महोदया, कुलसचिव महोदय, सभी विभागाध्यक्षों, संकाय सदस्यों, कर्मचारियों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों तथा संपादकीय मंडल के सभी सहयोगियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। आपके सहयोग और विश्वास से ही 'परिसर प्रतिध्वनि' निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। आइए, शैक्षणिक सत्र 2026–27 का स्वागत नए उत्साह, सकारात्मक सोच और उत्कृष्टता के संकल्प के साथ करें। ज्ञान, अनुशासन, नवाचार और मानवीय मूल्यों को अपना पथप्रदर्शक बनाकर हम अपने विश्वविद्यालय को नई उपलब्धियों की ओर अग्रसर करें।

डॉ. प्रेम कुमार
सह-आचार्य, हिंदी विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

नोट: आप सभी से विनम्र निवेदन है कि अपने बहुमूल्य सुझाव और प्रतिक्रियाएँ अवश्य प्रेषित करें, जिससे आगामी अंकों को और अधिक समृद्ध एवं उपयोगी बनाया जा सके।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर सात दिवसीय योग एवं प्राणायाम शिविर का आयोजन

भारत सरकार के आयुष मंत्रालय के निर्देशानुसार तथा स्वस्थ, संतुलित एवं तनावमुक्त जीवनशैली को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, वाटिका में 'योग संगम–2026' के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय योग दिवस–2026 के उपलक्ष्य में 14 जून से 21 जून 2026 तक सात दिवसीय योग एवं प्राणायाम शिविर का सफल आयोजन किया गया। योग सप्ताह के दौरान विश्वविद्यालय परिसर में प्रतिदिन योगाभ्यास, प्राणायाम, ध्यान एवं विभिन्न स्वास्थ्यवर्धक गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिसमें शिक्षकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई। शिविर के दौरान प्रख्यात योगाचार्य डॉ. रामादेव राम अलारिया ने प्रतिभागियों को ताड़ासन, वृक्षासन, भुजंगासन, वज्रासन, त्रिकोणासन सहित विभिन्न योगासनों तथा अनुलोम-विलोम, कपालभाति, भ्रामरी एवं अन्य प्राणायाम तकनीकों का अभ्यास कराया। उन्होंने योग के शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक लाभों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि नियमित योगाभ्यास व्यक्ति को स्वस्थ, ऊर्जावान, एकाग्र एवं तनावमुक्त बनाता है। उन्होंने सभी से योग को अपनी दैनिक दिनचर्या का अभिन्न अंग बनाने का आह्वान किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रेसिडेंट डॉ. रश्मि जैन ने अपने संदेश में कहा कि- "योग भारत की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत और विश्व को दिया गया अमूल्य उपहार है। योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि शरीर, मन और आत्मा के समन्वय का विज्ञान है।" उन्होंने यह भी कहा कि वर्तमान भागदौड़ भरी जीवनशैली में मानसिक तनाव, असंतुलित दिनचर्या और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से बचाव के लिए योग को अपनाना समय की आवश्यकता है। नियमित योगाभ्यास से व्यक्ति न केवल स्वस्थ रहता है, बल्कि आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच और कार्यक्षमता में भी वृद्धि होती है।

प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने अपने संदेश में कहा कि- “प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन कुछ समय योग और प्राणायाम के लिए अवश्य निकालना चाहिए। योग स्वस्थ शरीर, शांत मन और अनुशासित जीवन का आधार है।” उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे योग को केवल एक दिवस तक सीमित न रखें, बल्कि इसे अपनी जीवनशैली का स्थायी हिस्सा बनाकर स्वस्थ एवं संतुलित जीवन की दिशा में आगे बढ़ें। उन्नत भारत अभियान के विश्वविद्यालय समन्वयक नरेश अरोड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय स्वास्थ्य जागरूकता से जुड़े राष्ट्रीय अभियानों में निरंतर सक्रिय भूमिका निभा रहा है। उन्होंने जानकारी दी कि आयुष मंत्रालय के निर्देशानुसार ‘फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल’ अभियान के अंतर्गत 14 जून को भी योग एवं फिटनेस गतिविधियों का आयोजन किया गया था। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य विद्यार्थियों एवं आमजन में स्वास्थ्य, फिटनेस, नियमित व्यायाम और सक्रिय जीवनशैली के प्रति जागरूकता बढ़ाना है।

राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) के प्रभारी श्री यश यादव ने बताया कि विश्वविद्यालय में 14 जून से 21 जून तक योग सप्ताह मनाया गया, जिसके अंतर्गत प्रतिदिन योगाभ्यास, प्राणायाम, ध्यान, फिटनेस गतिविधियाँ एवं स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। उन्होंने कहा कि योग सप्ताह का उद्देश्य विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना तथा योग के प्रति जन-जागरूकता का विस्तार करना था। योग सप्ताह के सभी कार्यक्रमों में विश्वविद्यालय परिवार की सक्रिय एवं उत्साहपूर्ण सहभागिता रही। कार्यक्रम के समापन अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों ने सामूहिक रूप से नियमित योगाभ्यास करने तथा स्वस्थ, संतुलित और अनुशासित जीवनशैली अपनाने का संकल्प लिया। विश्वविद्यालय प्रशासन ने भविष्य में भी स्वास्थ्य, फिटनेस एवं जन-जागरूकता से जुड़े ऐसे कार्यक्रमों का नियमित आयोजन करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। योग सप्ताह का यह आयोजन विश्वविद्यालय की इस सोच को सुदृढ़ करता है कि स्वस्थ शरीर, संतुलित मन और सकारात्मक जीवन-दृष्टि ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं समग्र व्यक्तित्व विकास का आधार है।

विश्वविद्यालय 'एक्सीलेंस इन हायर एजुकेशन अवॉर्ड–2026' से हुआ सम्मानित

दिनांक 30 जून 2026 को विश्वविद्यालय को ग्लोबल बिजनेस कन्वर्जेंस समिट–2026 (7वें विश्व एसएमई दिवस) के अवसर पर आयोजित WASME Global Awards–2026 में प्रतिष्ठित 'Excellence in Higher Education Award–2026' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालय द्वारा गुणवत्ता, नवाचार और उत्कृष्टता की दिशा में किए गए उल्लेखनीय योगदान का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण सम्मान है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय को 'Education Partner Sponsor Appreciation Award' से भी सम्मानित किया गया। यह सम्मान शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार, उद्यमिता, रोजगारोन्मुख शिक्षा (Employability) तथा सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देने में विश्वविद्यालय के उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह सम्मान विश्वविद्यालय की उस सतत प्रतिबद्धता का प्रमाण है, जिसके अंतर्गत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अनुसंधान, कौशल विकास, नवाचार तथा उद्योग-अकादमिक सहयोग को निरंतर प्रोत्साहित किया जा रहा है। विश्वविद्यालय आधुनिक शिक्षा प्रणाली के माध्यम से विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर की चुनौतियों के अनुरूप तैयार करने तथा उन्हें सक्षम, उत्तरदायी एवं नवाचारी पेशेवर के रूप में विकसित करने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

विश्वविद्यालय प्रशासन ने इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह सम्मान केवल संस्थान का नहीं, बल्कि विश्वविद्यालय परिवार के प्रत्येक सदस्य की निष्ठा, परिश्रम और समर्पण का परिणाम है। विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों, शोधार्थियों, अधिकारियों, कर्मचारियों, पूर्व विद्यार्थियों (Alumni) तथा सभी हितधारकों के सामूहिक प्रयासों ने विश्वविद्यालय को यह विशिष्ट पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रेसिडेंट डॉ. रश्मि जैन ने कहा कि यह सम्मान विश्वविद्यालय के लिए प्रेरणा का स्रोत है और हमें शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्रों में और अधिक उत्कृष्ट कार्य करने के लिए उत्साहित करता है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय भविष्य में भी गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्रदान करते हुए राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान को और अधिक सुदृढ़ करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहेगा। यह उपलब्धि यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर की शैक्षणिक उत्कृष्टता, वैश्विक दृष्टिकोण एवं नवाचार-आधारित शिक्षा के प्रति उसकी अटूट प्रतिबद्धता का सशक्त प्रमाण है तथा विश्वविद्यालय परिवार के लिए गर्व, प्रेरणा और उत्साह का विषय है।

दैनिक भास्कर के '75 लाख पौधारोपण अभियान' के तहत विश्वविद्यालय परिसर में 50 पौधों का रोपण

दिनांक 13 जुलाई 2026 को पर्यावरण संरक्षण एवं हरित भविष्य के संकल्प को साकार करने की दिशा में दैनिक भास्कर द्वारा संचालित '75 लाख पौधारोपण अभियान' के अंतर्गत यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, वाटिका में सोमवार, 13 जुलाई 2026 को वृहद पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिसर में विभिन्न प्रजातियों के 50 पौधे रोपे गए। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय प्रशासन, शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के स्वयंसेवकों तथा विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ विश्वविद्यालय की प्रेसिडेंट डॉ. रश्मि जैन द्वारा पौधारोपण कर किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण आज केवल एक सामाजिक दायित्व नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व से जुड़ा एक महत्वपूर्ण विषय है। बढ़ते प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन एवं प्राकृतिक संसाधनों के क्षरण को देखते हुए प्रत्येक व्यक्ति को पौधारोपण के साथ-साथ उनके संरक्षण की जिम्मेदारी भी निभानी चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे अपने जीवन में कम-से-कम एक पौधा अवश्य लगाएँ और उसे वृक्ष बनने तक उसकी देखभाल करें।

प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वृक्षारोपण केवल एक औपचारिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ, सुरक्षित और हरित पर्यावरण प्रदान करने का संकल्प है। उन्होंने कहा कि यदि प्रत्येक नागरिक पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक होकर नियमित रूप से पौधे लगाए और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करे, तो एक स्वच्छ एवं संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण संभव है। कार्यक्रम के दौरान कुलसचिव डॉ. अनूप शर्मा, परीक्षा नियंत्रक डॉ. कमल किशोर जांगीड़, डॉ. रोहित सारस्वत डीन, अनुसंधान तथा डॉ. मोनिका शर्मा, डीन, विधि संकाय ने भी पौधारोपण कर विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता के संवर्धन तथा हरित परिसर के निर्माण में सक्रिय योगदान देने के लिए प्रेरित किया। इस पौधारोपण अभियान का सफल संचालन राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के कार्यक्रम अधिकारी यश यादव के निर्देशन में किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सुरेन्द्र चौधरी एवं दिनेश चौधरी का विशेष सहयोग रहा। एनएसएस स्वयंसेवकों एवं विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह एवं समर्पण के साथ पौधारोपण किया तथा परिसर को अधिक हरित एवं स्वच्छ बनाने में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। कार्यक्रम के समापन पर सभी उपस्थित अधिकारियों, शिक्षकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने लगाए गए पौधों के संरक्षण, नियमित देखभाल एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति निरंतर जागरूक रहने का सामूहिक संकल्प लिया।

विज्ञान में महिलाएँ: नवाचार, नेतृत्व और नए भारत की प्रेरक शक्ति

"यदि एक महिला शिक्षित होती है तो एक परिवार शिक्षित होता है, और यदि एक महिला वैज्ञानिक बनती है तो पूरा समाज नवाचार की दिशा में आगे बढ़ता है।"

इक्कीसवीं सदी को विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार का युग कहा जाता है। आज विश्व जिन चुनौतियों का सामना कर रहा है जलवायु परिवर्तन, स्वास्थ्य संकट, ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा और सतत विकास उनके समाधान विज्ञान के माध्यम से ही संभव हैं। इन समाधानों को प्रभावी बनाने में महिलाओं की भागीदारी केवल आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य है। आज महिलाएँ विज्ञान की सहभागी नहीं, बल्कि परिवर्तन की अग्रदूत बनकर उभर रही हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि महिलाओं ने अनेक सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं के बावजूद विज्ञान के क्षेत्र में अमिट छाप छोड़ी है। मैडम क्यूरी, डॉ. असीमा चटर्जी, डॉ. जानकी अम्मल, डॉ. टेसी थॉमस जैसी महान वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया कि प्रतिभा का कोई लिंग नहीं होता। भारत की बेटियाँ आज अंतरिक्ष अनुसंधान, जैव प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, पर्यावरण विज्ञान, चिकित्सा और इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में विश्व स्तर पर अपनी पहचान बना रही हैं। फिर भी यह स्वीकार करना होगा कि विज्ञान में महिलाओं की यात्रा अभी पूर्ण नहीं हुई है। उच्च स्तरीय अनुसंधान, नेतृत्व पदों, पेटेंट, स्टार्टअप और नीति-निर्माण में उनकी भागीदारी अपेक्षाकृत कम है। यह समय केवल समान अवसर देने का नहीं, बल्कि ऐसा वातावरण बनाने का है जहाँ प्रत्येक छात्रा अपने विचारों को शोध, नवाचार और उद्यमिता में बदल सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह नीति रटने की संस्कृति के स्थान पर जिज्ञासा, अनुसंधान, बहुविषयक शिक्षा और नवाचार पर बल देती है। यदि विश्वविद्यालय इस दृष्टि को प्रभावी रूप से लागू करें तो भारत विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व स्थापित कर सकता है। आज आवश्यकता है कि विश्वविद्यालय केवल डिग्री प्रदान करने वाले संस्थान न रहें, बल्कि Innovation Ecosystem के रूप में विकसित हों। प्रत्येक छात्रा को स्नातक स्तर से ही शोध, प्रयोग और समस्या-समाधान आधारित शिक्षा से जोड़ा जाए। "एक छात्रा–एक शोध परियोजना", Women Innovation Club, मेंटर-मेंटी कार्यक्रम, AI एवं Emerging Technologies प्रशिक्षण, स्टार्टअप और पेटेंट प्रोत्साहन, तथा ग्रामीण समस्याओं के वैज्ञानिक समाधान जैसे नवाचार विज्ञान शिक्षा को नई दिशा दे सकते हैं। मैं यह भी मानती हूँ कि विज्ञान का वास्तविक उद्देश्य केवल प्रयोगशाला तक सीमित नहीं होना चाहिए। विज्ञान तब सार्थक होता है जब उसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे। इसलिए छात्राओं को जल संरक्षण, स्वच्छ ऊर्जा, पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य जागरूकता, जैविक कृषि और ग्रामीण विकास जैसे क्षेत्रों में वैज्ञानिक समाधान विकसित करने के लिए प्रेरित करना समय की आवश्यकता है। यही विज्ञान को समाज से जोड़ने का सबसे प्रभावी माध्यम होगा। यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, वाटिका, जयपुर का स्कूल ऑफ बेसिक एंड एप्लाइड साइंसेज़ इसी सोच के साथ कार्य कर रहा है। हमारा उद्देश्य विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, अनुसंधान संस्कृति, नवाचार, नैतिक मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करना है। हम चाहते हैं कि हमारी छात्राएँ केवल सफल वैज्ञानिक ही नहीं, बल्कि संवेदनशील नवप्रवर्तक, प्रभावी नेतृत्वकर्ता और राष्ट्र निर्माण की सक्रिय भागीदार बनें।

नई पीढ़ी की बेटियों के लिए मेरा संदेश है, बड़े सपने देखिए, प्रश्न पूछिए, प्रयोग कीजिए, असफलताओं से सीखिए और अपने ज्ञान को समाज के हित में उपयोग कीजिए। विज्ञान साहस, जिज्ञासा और निरंतर सीखने की यात्रा है। जो प्रश्न पूछने का साहस रखते हैं, वही भविष्य का निर्माण करते हैं। आइए, हम सब मिलकर ऐसा भारत बनाएँ जहाँ प्रत्येक बेटी को विज्ञान में आगे बढ़ने के समान अवसर मिलें; जहाँ प्रयोगशालाओं में उसकी प्रतिभा, शोध में उसकी जिज्ञासा, नवाचार में उसकी कल्पनाशक्ति और नेतृत्व में उसका आत्मविश्वास राष्ट्र की प्रगति का आधार बने। जब महिलाएँ विज्ञान का नेतृत्व करती हैं, तब केवल नई खोजें ही नहीं होतीं, बल्कि एक अधिक समावेशी, सशक्त और विकसित भारत का निर्माण भी होता है।

"विज्ञान में महिलाओं का सशक्तिकरण केवल समानता का प्रश्न नहीं, बल्कि भारत को ज्ञान, नवाचार और आत्मनिर्भरता की वैश्विक शक्ति बनाने का संकल्प है।"

डॉ. रजनी माथुर

डीन, स्कूल ऑफ बेसिक एंड एप्लाइड साइंसेज़

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, वाटिका, जयपुर

देश की सुरक्षा व्यवस्था : समकालीन संदर्भ में चुनौतियाँ और हमारी जिम्मेदारी

किसी भी राष्ट्र की प्रगति, समृद्धि और स्थिरता का आधार उसकी सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था होती है। सुरक्षा केवल सीमाओं की रक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें आंतरिक शांति, साइबर सुरक्षा, आर्थिक सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, जैविक सुरक्षा और नागरिकों की सुरक्षा भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में बदलते भू-राजनीतिक समीकरणों, तकनीकी विकास और नए प्रकार के खतरों ने राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा को पहले की अपेक्षा अधिक व्यापक और जटिल बना दिया है। ऐसे समय में भारत ने अपनी सुरक्षा व्यवस्था को आधुनिक, सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में उल्लेखनीय कदम उठाए हैं। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और इसकी भौगोलिक सीमाएँ अनेक देशों से जुड़ी हुई हैं। विविध भौगोलिक परिस्थितियाँ, विशाल समुद्री क्षेत्र तथा सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक चुनौतीपूर्ण बनाती हैं। सीमाओं की सुरक्षा के लिए भारतीय थल सेना, नौसेना, वायु सेना तथा सीमा सुरक्षा बल, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस, असम राइफल्स, सशस्त्र सीमा बल और अन्य सुरक्षा एजेंसियाँ दिन-रात राष्ट्र की रक्षा में तत्पर रहती हैं। इनकी सतर्कता और समर्पण के कारण देश की सीमाएँ सुरक्षित हैं और नागरिक निर्भय होकर अपने जीवन एवं विकास की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। समकालीन समय में पारंपरिक युद्धों के साथ-साथ हाइब्रिड वॉरफेयर (Hybrid Warfare) का स्वरूप भी तेजी से उभरकर सामने आया है। अब युद्ध केवल सीमाओं पर हथियारों से नहीं लड़े जाते, बल्कि साइबर हमलों, दुष्प्रचार (Disinformation), कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) के दुरुपयोग, ड्रोन तकनीक, आर्थिक दबाव और सूचना युद्ध के माध्यम से भी देशों की सुरक्षा को चुनौती दी जाती है। ऐसे में भारत ने साइबर सुरक्षा, रक्षा अनुसंधान, अंतरिक्ष तकनीक और आधुनिक रक्षा प्रणालियों के विकास पर विशेष ध्यान दिया है।

पिछले कुछ वर्षों में भारत ने रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान के अंतर्गत रक्षा उत्पादन और स्वदेशी तकनीकों के विकास को प्राथमिकता दी है। आधुनिक लड़ाकू विमान, मिसाइल प्रणाली, ड्रोन, रक्षा उपकरण तथा निगरानी प्रणालियों के स्वदेशी निर्माण ने भारत की सामरिक क्षमता को नई मजबूती प्रदान की है। इससे न केवल राष्ट्रीय सुरक्षा सुदृढ़ हुई है, बल्कि रक्षा क्षेत्र में अनुसंधान, रोजगार और तकनीकी विकास को भी प्रोत्साहन मिला है। राष्ट्रीय सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण पक्ष आंतरिक सुरक्षा भी है। आतंकवाद, उग्रवाद, संगठित अपराध, साइबर अपराध, मादक पदार्थों की तस्करी तथा फर्जी सूचनाओं का प्रसार आज भी गंभीर चुनौतियाँ हैं। इनसे प्रभावी ढंग से निपटने के लिए केवल सुरक्षा एजेंसियों का प्रयास पर्याप्त नहीं है, बल्कि नागरिकों की जागरूकता और सक्रिय सहयोग भी आवश्यक है। समाज में सामाजिक सद्भाव, कानून का सम्मान और डिजिटल माध्यमों का जिम्मेदारीपूर्वक उपयोग राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आज के डिजिटल युग में साइबर सुरक्षा राष्ट्रीय सुरक्षा का अभिन्न अंग बन चुकी है। सरकारी संस्थानों, बैंकों, शैक्षणिक संस्थाओं, उद्योगों और नागरिकों के व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा अत्यंत आवश्यक है। साइबर हमलों से बचाव के लिए तकनीकी संसाधनों के साथ-साथ डिजिटल साक्षरता और साइबर जागरूकता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। प्रत्येक नागरिक को संदिग्ध लिंक, फर्जी संदेश, ऑनलाइन धोखाधड़ी और गलत सूचनाओं से सतर्क रहना चाहिए।

श्री नरेश अरोड़ा
उप-कुलसचिव
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, वाटिका, जयपुर

Plastic Decomposition: Environmental Challenges and Sustainable Solutions

Plastic waste has rapidly emerged as one of the greatest environmental threats of the modern era, as its production has grown to hundreds of millions of tons annually while disposal methods remain inadequate, with landfilling and incineration creating further pollution and mechanical recycling suffering from quality loss; chemical recycling offers recovery of valuable monomers but requires harsh conditions, whereas enzymatic degradation provides a greener alternative under mild environments though limited by cost, stability, and efficiency, and biomimetic catalysis has recently gained attention for combining enzyme-inspired activity with the durability of inorganic materials,

making it a promising innovation; the environmental consequences of plastic degradation are severe, since plastics fragment into micro plastics that contaminate soil, water, and air, harm wildlife through ingestion and entanglement, disrupt ecosystems such as coral reefs, release toxic chemicals and greenhouse gases, and infiltrate the food chain, ultimately affecting human health; future prospects lie in developing biodegradable polymers from renewable resources, advancing chemical recycling to recover virgin-quality materials, engineering enzymes and biomimetic catalysts for efficient breakdown, strengthening waste management systems, and adopting circular economy models supported by strict policies and regulations, and ultimately no single method alone can solve the plastic crisis, but an integrated approach combining mechanical, chemical, enzymatic, and biomimetic strategies can significantly reduce pollution, conserve resources, and move society toward a sustainable future where plastic use and disposal are responsibly managed.

Manisha Yadav
Assistant Professor
School of Basic and Applied Sciences